मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

•सितंबर–दिसंबर, 2019•

Patron :

Dr. U. Prakasam

Principal Chief Conservator of Forests
(HOFF), Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :	*Advisory Board :*
Rajesh Shrivastav Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)	***Jagdeesh chandra*** (Retired Conservator of Forests)
Dr. P.C. Dubey Additional Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)	***A.K. Nagar*** (Retired Conservator of Forests)
H.S. Negi Additional Principal Chief Conservator of Forests (Wildlife)	***R.K. Dixit*** (Retired DCF)
Pushkar Singh Additional Principal Chief Conservator of Forests (Development)	***A.K.Khare*** (Retired DCF)
Chitranjan Tyagi Additional Principal Chief Conservator of Forests (JFM)	
Rajesh Kumar Additional Principal Chief Conservator of Forests (CAMPA)	
Atul Shrivastav Additional Principal Chief Conservator of Forests (M.P. State Minor Forest Produce Trading & Development Co-operative Federation)	
Rakesh Yadav Additional Principal Chief Conservator of Forests (Madhya Pradesh Rajya Van Vikas Nigam Limited)	
B.K. Dhar Prachar Adhikari (Samanvay)	
S.P. Jain DCF (Research, Extension and Lok Vaniki)	

Editor :

Dr. P.C. Dubey
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Prachar Prasar Prakosth Team :

Deepak Meshram

Published by : APCCF (R/E) on behalf of MP Forest Department.
Printed by : Super Printers & Plastics Works on behalf of Madhya Pradesh Madhyam.
Printed at : Super Printers & Plastics Works, Plot No. 22 Nadeem House, Press Complex Zone 1, M P Nagar, Bhopal
Published at Room No. 140, Prachar Prasar Prakosth, Satpura Bhavan, Bhopal, M.P.
Email : pracharprasarprakaosth@mp.gov.in, Contact No. : 0755-2524293, Editor: Dr. P.C. Dubey, APPCF (R/E)

इस बार के अंक में

वन्य प्राणी सप्ताह 2019 कार्यक्रम का आयोजन (वन विहार)	1
अनुसंधान एवं विस्तार रोपणियों का श्रेणीकरण एवं मान्यता	5
Ecotourism an important tool for forestry management : Madhya Pradesh	11
Nature Education & Eco-Anubhuti Camps at Kanha	19
राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स मध्यप्रदेश भोपाल - बाघ मित्र अवॉर्ड से सम्मानित	22
7वां अंतर्राष्ट्रीय वन मेला - 18 से 22 दिसम्बर 2019 (भोपाल)	23
वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में अनुभूति कार्यक्रम का आयोजन	27
Laxmi Maravi of Kanha Awarded with the Sanctuary Wildlife Award - 2019	29
वृक्षारोपण निगरानी प्रणाली (वन विभाग द्वारा रोपित पौधों का अनुश्रवण एवं मूल्यांकन)	30
मध्यप्रदेश में वन आवरण - 2019	31
राज्य स्तरीय मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता क्विज़-2019	35
मोगली बाल उत्सव कार्यक्रम - 2019	37
डूंडीशिखर, वन सुरक्षा समिति - बांस प्रबंधन से आजीविका	39
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में औषधीय पादप उत्पाद विषय पर कार्यशाला	43
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा लाख की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन	44
मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम लिमिटेड (निगमित सामाजिक दायित्व)	47
वनमण्डल भोपाल उड़नदस्ता द्वारा इमारती लकड़ी का अवैध परिवहन और तेंदुए की खाल के तस्कर की गिरफ्तारी	50
अखबारों के आईने से	52
Promotions and Retirements	56

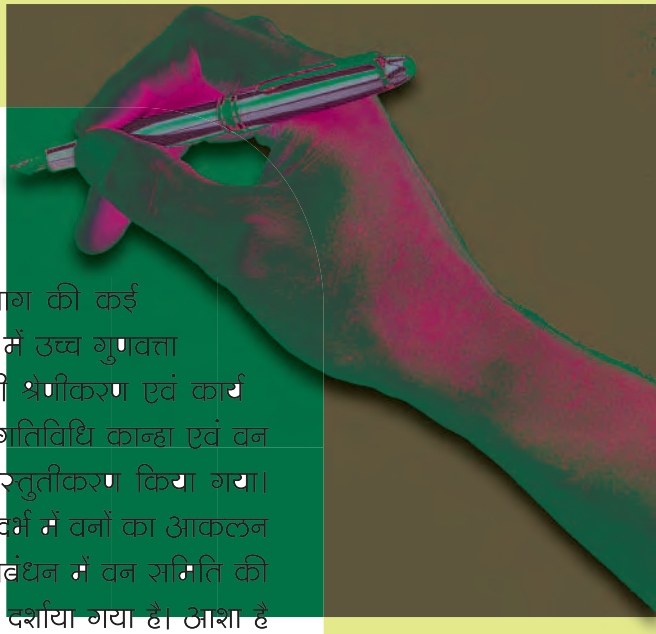

संपादकीय

प्रस्तुत अंक माह अक्टूबर-दिसंबर त्रैमास में विभाग की कई गतिविधियों के लिए याद किया जावेगा। रोपणियों में उच्च गुणवत्ता के पौधे तैयार किये जाने हेतु एक नवाचार रोपणी श्रेणीकरण एवं कार्य मान्यता का प्रारंभ किया गया है। प्रस्तुत अंक में गतिविधि कान्हा एवं वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में अनुभूति कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण किया गया। भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट 2019 मध्यप्रदेश के संदर्भ में वनों का आकलन लेख शामिल किया गया है। इसके साथ ही बांस प्रबंधन में वन समिति की भूमिका तथा आजीविका विषय को प्रभावी ढंग से दर्शाया गया है। आशा है कि इस अंक में विभाग की कई गतिविधियों को प्रस्तुत किया गया है जिसे पढ़कर आपको विभाग के बारे में अच्छी जानकारी उपलब्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित.

डॉ. पी.सी. दुबे

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2019 का आयोजन

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2019 का शुभारंभ श्री ए.पी. श्रीवास्तव, अपर मुख्य सचिव, वन, म.प्र. शासन द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री यू. प्रकाशम प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख मध्यप्रदेश वन विभाग तथा प्रभारी प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी), श्री राजेश श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (स.व.प्र./अनु.वि.लोकवानिकी), श्री एस.पी. स्याल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन), संचालक वन विहार श्रीमती कमलिका मोहंता उपस्थित थे। इस अवसर सेवानिवृत्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. सुहास कुमार विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मंच संचालन श्री ए.के. खरे सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक द्वारा किया गया।

वन्यप्राणी सप्ताह के प्रथम दिन वन विहार राष्ट्रीय उद्यान स्थित विहार वीथिका में चित्रकला प्रतियोगिता संपन्न हुई।

राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2019 के अंतर्गत दिनांक 02 अक्टूबर 2019 को होटल पलाश रेसीडेन्सी भोपाल में वन्यप्राणी संरक्षण हेतु युवा संसद (यूथ पार्लियामेंट) का आयोजन किया गया, जिसमें मध्यप्रदेश के समस्त 16 वन वृत्तों से चयनित 64 छात्र/छात्राओं ने वृत्तों का प्रतिनिधित्व करते हुये वन्यप्राणी संरक्षण से सम्बंधित विषयों पर अपना पक्ष रखा।

दिनांक 03.10.19 को राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2019 के उपलक्ष्य में पक्षी दर्शन व जैव विविधता अवलोकन शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में अंतिम सत्र में "Vulture Conservation" विषय पर स्रोत व्यक्ति के रूप में बी.एन. एच.एस. के प्रतिनिधि डॉ. देवाशीष सैकिया एवं डॉ. के.के. यादव गिद्ध विशेषज्ञ ने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई।

राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2019 के अंतर्गत दिनांक 04 अक्टूबर को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में स्कूली बच्चों हेतु सृजनात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विद्यालयों के कुल 211 बच्चों ने भाग लिया। इन विद्यार्थियों को श्री संजय, शिक्षक के द्वारा रंगीन कागज के माध्यम से विभिन्न पक्षी, तितलियाँ एवं फूलों की आकृतियाँ बनाना सिखाया गया। इस अवसर पर श्री अरविन्द अनुपम, मूर्तिकार क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय के द्वारा क्ले माडलिंग के माध्यम से सारस पक्षी बनाना सिखाया गया।

सुश्री पूनम तिवारी द्वारा स्टोन पेंटिंग के माध्यम से वन्यप्राणियों के चित्र पत्थरों पर उकेरे गये।

अनुपयोगी सामग्री से तैयार किये गये वन्यप्राणियों की एक अन्य प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें विद्यालयीन छात्रों हेतु ''पर्यावरण बचाओ'' एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थियों हेतु ''भारत का वन्यजीव'' विषय दिया गया। इस प्रतियोगिता में 89 प्रतिभागियों ने भाग लेकर पर्यावरण संरक्षण एवं वन्यप्राणियों की आकृतियाँ बनाईं ।

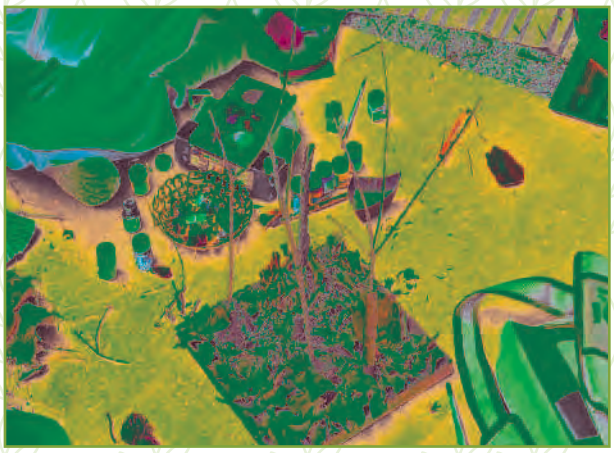

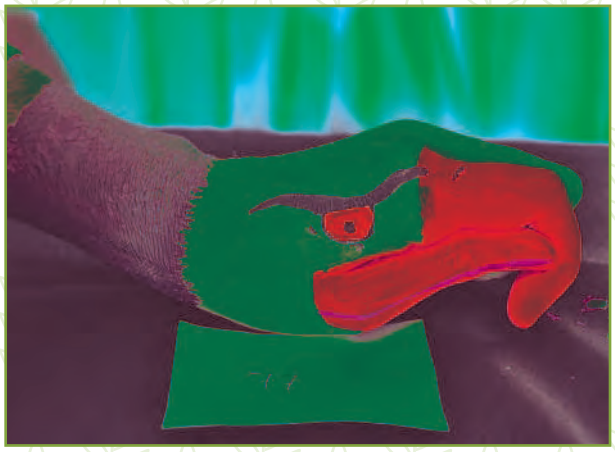

राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2019 के अंतर्गत ''वन्यप्राणी'' थीम पर पाम पेंटिंग एवं मेंहदी प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2019 के अंतर्गत दिनांक 06 अक्टूबर 2019 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में पक्षी अवलोकन शिविर का आयोजन किया गया। पक्षियों के बारे में उनके व्यवहार, पक्षियों के भोजन, पक्षियों की विशेषतायें तथा उनके प्रकृति में योगदान के बारे में बताया गया।

दिनांक 7.10.19 को स्कूल के बच्चों हेतु फैंसी ड्रेस एवं फेस पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

वन्यप्राणी सप्ताह 2019 का समापन वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल में श्री उमंग सिंघार जी, माननीय मंत्री, वन, मध्यप्रदेश शासन के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि द्वारा राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह के अंतर्गत सम्पन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

अनुसंधान एवं विस्तार रोपणियों का श्रेणीकरण एवं मान्यता

(Nursery Gradation & Accreditation)

विश्वसनीयता की ओर बढ़ते कदम

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त -

परिचय -

मध्यप्रदेश के वनों की उत्पादकता में वृद्धि, वन क्षेत्र के बाहर सामुदायिक एवं निजी भूमि पर वनीकरण कार्य द्वारा वनोपज की मांग पूर्ति हेतु प्रत्येक कृषि जलवायु प्रक्षेत्र में क्रमशः बैतूल, भोपाल, ग्वालियर, इंदौर, जबलपुर, झाबुआ, खंडवा, रतलाम, रीवा, सागर एवं सिवनी में अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त की रोपणियाँ स्थापित हैं।

उद्देश्य -

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त के अंतर्गत रोपणियों में ज्ञात बीज स्रोत से प्राप्त बीज द्वारा मानक गुणवत्ता के वानिकी/फलदार/औषधीय/लघुवनोपज/संकटापन्न/विलुप्तप्राय एवं आवश्यकतानुसार क्लोनल/ग्राफ्टेड पौधे तैयार कर विभागीय वृक्षारोपण, शासकीय/अशासकीय विभागों, संस्थाओं एवं जनसामान्य को रोपण हेतु प्रदाय किये जाते हैं। पौध तैयारी के साथ-साथ वनों के महत्व हेतु प्रचार-प्रसार, वन एवं पर्यावरण के विषय पर जागरूकता, कृषि वानिकी को बढ़ावा देने का कार्य किया जाता है।

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता का उद्देश्य -

- रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता से विभाग उत्कृष्ट पौधों, अन्य रोपण सामग्री की तैयारी एवं उपलब्धता पर प्रतिबद्धता का प्रदर्शन प्रभावी ढंग से कर सकेगा। (Demonstrate commitment to quality)
- इस व्यवस्था द्वारा यह अवसर प्राप्त होगा कि विभिन्न अनुसंधान की इकाईयों में पदस्थ अधिकारी एवं कर्मचारी अपने कार्यों को अपनी दक्षता के अनुरूप दायित्वों एवं आवश्यकताओं की पहचान एवं कार्यों की मूर्तरूप दे सकेंगे।
- रोपणी मान्यता एवं श्रेणीकरण द्वारा कर्मचारी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकेंगे तथा मानक आकार एवं सुदृढ़ता के पौध नियमित रूप से तैयार एवं पूर्ति कर सकेंगे एवं उत्कृष्ट व्यवस्था स्थापित करने हेतु प्रयत्नशील होंगे।
- उक्त व्यवस्था द्वारा विभाग अपने दायित्वों के प्रति समर्पण एवं प्रतिबद्धता को निर्धारित मानकों के आधार पर दर्शा सकेगा।
- उक्त व्यवस्था द्वारा विभाग अपने महत्व, निष्ठा, उपभोक्ता सेवायें तथा अपने निर्धारित लक्ष्यों की सर्वोत्कृष्ट तरीके से प्रदाय कर सकेगा।
- उक्त व्यवस्था द्वारा विभाग निर्धारित मानकों के पौधे तैयार कर उपभोक्ताओं में एक विश्वास एवं आवश्वासन दे सकेगा।
- इसके साथ ही यह व्यवस्था एक इच्छित वस्तु-सूचक, स्वतः मूल्यांकन, लगातार सुधार एवं प्रगति हेतु पथ प्रदर्शित करेगी।
- यह व्यवस्था एक प्रतिस्पर्धी, जवाबदेही, संसाधन संयोजन का अवसर प्रदान करती है। व्यवस्था हमारे उत्पाद के प्रति एक विश्वास स्थापित करती है कि विभिन्न सामग्रियों के उपयोग में पूरी पारदर्शिता एवं व्यावसायिकता का दृष्टिकोण रहा है।

* रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता द्वारा विभाग अपने पौध तैयारी एवं विस्तार कार्यक्रमों को गति दे सकेगा साथ ही आम जन के बीच विश्वसनीयता स्थापित कर सकेगा।
* इस व्यवस्था द्वारा पौध एवं इससे जुड़ी सामग्री के विक्रय में बाधक तकनीकी खामियाँ दूर होंगी, जिससे हम विश्वसनीयता के साथ वन क्षेत्र एवं वन क्षेत्र के बाहर पौध उत्पाद इससे जुड़ी रोपण सामग्री का विक्रय कर सकेंगे। पूरे स्पलाई चेन में एक विश्वास तथा गुणवत्ता विश्वसनीयता बनी रहेगी।

अधोसंरचना एवं नवाचार –

विगत वर्षों में रोपणियों में ज्ञात बीज स्रोतों से विभिन्न प्रकार के वानिकी एवं संकटापन्न प्रजातियों के पौधों की तैयारी हेतु आवश्यक अधोसंरचना विकास में व्यापक सुधार किया गया है। रोपणियों को एक नया आयाम एवं आधुनिक स्वरूप देने की दृष्टि से प्रमुख रूप से निम्न कार्यों को कराया गया -

* मानक आकार के उत्कृष्ट एवं विविधता युक्त पौध तैयारी हेतु अधोसंरचना विकास
* वेल्यू एडेड वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन
* माइक्रो स्प्रिंकलर सिस्टम स्थापना
* सौर ऊर्जा के माध्यम से विद्युत उत्पादन
* रोपणियों में जल संचयन का कार्य
* पेय जल व्यवस्था
* नीम खली/कोकोपिट/जीवामृत उत्पादन की व्यवस्था
* मिस्ट चेंबर, ग्रीन हाउस, ग्रीन शेड, पॉलीहाउस
* ईको पर्यटन का विकास
* रोपणी से सम्बंधित विषयों पर शोध
* टिश्यू कल्चर द्वारा पौधा तैयारी
* बीज स्रोतों की पहचान
* कौशल उन्नयन
* मॉनिटरिंग
* आम लोगों की ऑनलाइन माध्यम द्वारा रोपणी तक पहुँच
* प्रचार-प्रसार
* रोपणियों का बहु आयामी स्वरूप
* रोपणी पर्यटन, ज्ञान एवं शिक्षा का केन्द्र एवं मनोरंजन केन्द्र के रूप में स्थापित हुए है।

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता प्रक्रिया –

1. श्रेणीकरण एवं मान्यता कार्य हेतु प्रथम चरण में उत्पाद मानकों तथा प्रक्रिया मानकों का निर्धारण किया गया।
2. द्वितीय चरण में आन्तरिक मूल्यांकन अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त स्तर पर किया गया।

3. तृतीय चरण में SFRI द्वारा मूल्यांकन किया जा रहा है।
4. चर्तुथ चरण में रोपणियों एवं उत्पाद हेतु श्रेणीकरण तथा मान्यता पर प्रकाशन किया जावेगा।
5. उक्त प्रकाशन पर सम्बंधित अनुसंधान एवं विस्तार से अभिमत लिया जाकर अंतिम रूप से श्रेणीकरण एवं मान्यता का प्रकाशन किया जावेगा।
6. रोपणियों के श्रेणीकरण एवं मान्यता के दृष्टिकोण से निम्न 9 बिंदुओं का चयन किया गया जिस आधार पर श्रेणीकरण एवं मान्यता हेतु कार्यवाही की गयी।

चयनित गतिविधि

* बीज स्रोत एवं पौधों की गुणवत्ता
* पौधों की विविधता
* अधोसंरचना
* जैविक खाद
* अभिलेख संधारण
* नवाचार एवं शोध
* व्यवसायिक सेवा
* कौशल क्षमता एवं ज्ञान
* रोपणी प्रदर्शन

अहमदपुर रोपणी भोपाल

सभी चयनित गतिविधियों हेतु विषय वस्तु से जुड़े बिन्दुओं का समूह तैयार किया जिनका विवरण निम्नानुसार है-

क्रमांक	चयनित गतिविधि	निर्धारित बिन्दु परिशिष्ट ''क'' अनुसार	निर्धारित अंक	प्रतिशत
1	पौधों की गुणवत्ता	4, 12, 13, 23	32	32
2	पौध विविधता	21, 22	11	11
3	अधोसंरचना	5, 6, 7, 9, 10, 11	17	17
4	जैविक खाद	8	5	5
5	नवाचार	20	5	5
6	व्यवसायिक सेवा	15, 16, 17, 18	8	8
7	कौशल क्षमता	19	5	5
8	अभिलेख	14	7	7
9	प्रदर्शन (निष्पादन)	3, 2	10	10

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त (रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता हेतु मापदण्ड) परिशिष्ट 'क'

रोपणी की उत्पादन क्षमता ..... स्थान ..... क्षेत्रफल ..... मूल्यांकन अवधि .....

क्रमांक	रोपणी का नाम	रोपणी पहुँच मार्ग, बोर्ड, साफ-सफाई, बेड अंकन एवं योजनावार सेक्टर। प्रति 1 अंक	मानक पौध बिक्री	बीज स्रोत रजिस्टर संधारण	रोपणी अधोसंरचना							बीज एवं उपकरण भंडार	सोलर पैनल
					सिंचाई सुविधा	माईक्रो सिंचाई	जल संचयन उपाय	वर्मी कम्पोस्ट एवं अन्य जैविक खाद		मिस्ट चैम्बर पॉलि हाउस, ग्रीन नेट			
								उत्पादन 3 अंक	उपयोग 2 अंक	उपलब्धता 2 अंक	उपयोग 3 अंक		
क्र.	1	2	3	4	5	6	7	8		9		10	11
अंक		5	5	15	2	5	2	5		5		2	1
प्राप्त अंक													

रोपणी मैन्युअल			रोपणी मूलभूत सुविधा				कर्मचारी दक्षता एवं प्रशिक्षण		नवा-चार एवं शोध (3+2) अंक	संकटापन्न प्रजातियों की विविधता एवं संख्या	बड़ प्रजाति न्यूनतम 500 पौधे	ग्राफ्टिंग प्रजाति न्यूनतम 500 पौधे	कुल प्राप्त अंक	श्रेणी करण	मान्यता
पौध तैयारी हेतु समय प्रवाह चार्ट का पालन	पौध संवर्धन व्यवहार का पालन	रोपणी अभिलेख संधारण	पेय जल	प्रसाधन	विश्राम स्थल	आगन्तुक कक्ष	प्रशिक्षण 2 अंक	कार्य कुशलता 3 अंक							
12	13	14	15	16	17	18	19		20	21	22	23	24	25	26
5	10	7	2	2	2	2	5		5	10	1	2			
प्राप्त अंक															

नोट :

1. बिन्दु क्रमांक 4,6,7,8,13,14,20 में निर्धारित अंक का कम से कम 50 प्रतिशत प्राप्त होना अनिवार्य होगा।
2. बिन्दु क्रमांक 19: रोपणी प्रभारी को न्यूनतम 3 प्रशिक्षण दिये जाने एवं कर्मचारी दक्षता प्रदर्शन से सम्बंधित है।
3. बिन्दु 3 पर देय अंक मु.व.सं. द्वारा दिये गये लक्ष्य के अनुरूप होगा।
4. बिन्दु 5 पर अंक सिंचाई सुविधानुसार पौध तैयारी के आधार पर अंक दिया जाये। निर्मित अधोसंरचना के क्रियाशील होने की स्थिति में ही अंक दिया जावे।
5. निम्न अभिलेख अनिवार्य रूप से संधारित किए जावे।

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता

श्रेणी	प्राप्त अंक	स्टार (मान्यता)
उत्कृष्ट	91-100	5
बहुत अच्छा	71-90	4
अच्छा	51-70	3
सन्तोषजनक	31-50	2
सामान्य	30 से कम	1

रोपणी एक्शन प्लान	3 अंक
नर्सरी जनरल	1 अंक
नर्सरी स्टॉक रजिस्टर	2 अंक
नर्सरी स्टोर रजिस्टर	1 अंक

हस्ताक्षर

मुख्य वन संरक्षक

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त

परिणाम

प्रदेश में प्रत्येक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त द्वारा स्थानीय स्तर पर एक दल का गठन कर श्रेणीकरण एवं मान्यता विषय पर परीक्षण कराया गया। परीक्षण अनुसार प्रदेश स्तर पर परिणाम निम्नानुसार है -

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता वर्ष 2019-2020

क्र.	अ.वि. वृत्त का नाम	रोपणी की संख्या	श्रेणीकरण एवं मान्यता									
			उत्कृष्ट	(स्टार) मान्यता	बहुत अच्छा	(स्टार) मान्यता	अच्छा	(स्टार) मान्यता	संतोषजनक	(स्टार) मान्यता	सामान्य	(स्टार) मान्यता
1	2	3	4		5		6		7		8	
1	बैतूल	10	0	0	1	4	8	3	1	2	0	0
2	भोपाल	17	1	5	2	4	8	3	4	2	2	1
3	ग्वालियर	12	0	0	3	4	7	3	2	2	0	0
4	इन्दौर	10	3	5	3	4	3	3	1	2	0	0
5	जबलपुर	6	2	5	4	4	0	0	0	0	0	0
6	झाबुआ	12	0	0	2	4	6	3	4	2	0	0
7	खण्डवा	22	0	0	3	4	11	3	8	2	0	0
8	रतलाम	11	1	5	0	4	4	3	6	2	0	0
9	रीवा	21	2	5	2	4	17	3	0	0	0	0
10	सागर	19	0	0	15	4	4	3	0	0	0	0
11	सिवनी	31	0	0	13	4	18	3	0	0	0	0
	योग	**171**	**9**	**5**	**48**	**4**	**86**	**3**	**26**	**2**	**2**	**1**

रोपणी श्रेणीकरण-उत्कृष्ट रोपणी			वर्ष 2019-2020
क्रमांक	अ.वि. वृत्त का नाम	उत्कृष्ट रोपणी का नाम	मान्यता(स्टार)
1	भोपाल	1. अहमदपुर	5
2	इन्दौर	1. मालवाडेमों	5
		2. बड़गोंदा	5
		3. चन्द्रकेशर	5
3	जबलपुर	1. शहरी रोपणी	5
		2. परियट	5
4	रतलाम	1. क्षिप्राविहार	5
5	रीवा	1. रीवा	5
		2. समधिन	5
	कुल	**9 रोपणी**	**5**

रोपणी श्रेणीकरण-बहुत अच्छी रोपणी				वर्ष 2019-2020
क्रमांक	अ.वि. वृत्त का नाम	रोपणी का नाम	रोपणी संख्या	मान्यता (स्टार)
1.	बैतूल	खाकरापुरा, बागदेव	2	4
2.	भोपाल	बांसापुर, अमरावद	2	4
3.	ग्वालियर	केन्ट, अंगूरी, बैराज, भूता	4	4
4.	इन्दौर	पारस, बरोठा	2	4
5.	जबलपुर	कटरा, अमेरा, सरसवाही, दरौली	4	4
6.	झाबुआ	मोजीपाड़ा, अनास	2	4
7.	खण्डवा	निमाड़, नेपानगर, बोरगांव	3	4
8.	रीवा	मुकुन्दपुर	1	4
9.	सागर	चकरा, पाण्डाझिर, अमानगंज, अण्डेला, अमरमऊ, आमा, नोहटा, बहरोल, देवरा, विश्रामगंज, गंज, कुण्डेश्वर, सांगा, पिपरौट, सिरोंजा	15	4
10.	सिवनी	बाम्हनदेही-1, दुधिया, जेतपुर, बाम्हनदेही-2, बंजारी, बकौरी, आमगांव, यामनगर, परमहंसी, नान्ही, कन्हार, पोआमा-2, बैनगंगा, पोआमा-1	13	4
		कुल	48 रोपणी	

कुल रोपणियाँ	5 स्टार रैंकिंग रोपणियाँ	4 स्टार रैंकिंग रोपणियाँ	3 स्टार रैंकिंग रोपणियाँ	2 स्टार रैंकिंग रोपणियाँ	सामान्य रोपणियाँ
171	9	48	86	26	2

नोटः उत्कृष्ट एवं बहुत अच्छी रोपणी का थर्ड पार्टी के रूप में राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर द्वारा पुनः परीक्षण कराया जा रहा है।

सारांश

अच्छी गुणवत्ता के ज्ञात उत्कृष्ट क्षेत्रों से संग्रहीत बीज एवं मानक प्रक्रिया का पालन करते हुये श्रेष्ठ पौधा विभागीय रोपण कार्यक्रम के साथ निजी क्षेत्र एवं संस्थाओं को उपलब्ध कराये जा सकेंगे जिसके परिणामस्वरूप पौधों के जीवितता प्रतिशत एवं इच्छित उत्पाद लक्ष्य अनुरूप प्राप्त किए जा सकेंगे। इसके साथ ही एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, जवाबदेही, संसाधनों का बेहतर एवं तार्किक ढंग से उपयोग किया जा सकेगा।

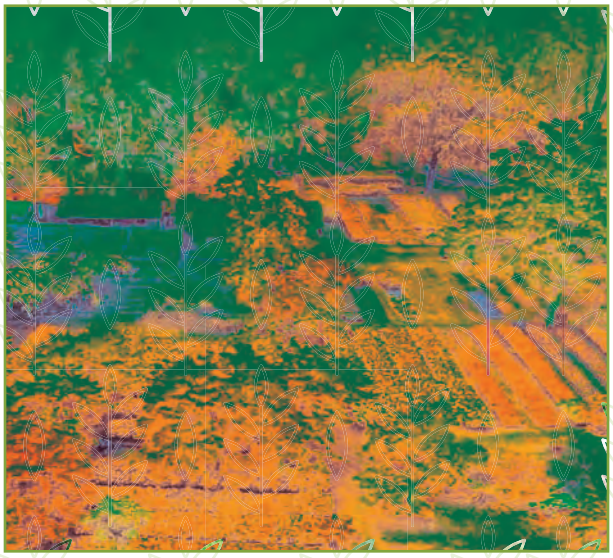

जयंतीकुंज रोपणी रीवा

Ecotourism An Important Tool For Forestry Management : Madhya Pradesh Experience

The National Working Plan code, 2014 has set objectives of Forest Management planning as under :

Forest Management Planning must provide for sustainable management of forests and its biodiversity as enshrined in the National Forest Policy, encompassing the ecological (environmental), economic (production) and social (including cultural) dimensions. The objectives for attaining this goal include conservation of forests and reducing forest degradation, maintenance and enhancement of ecosystem services including Ecotourism,...

Madhya Pradesh is bestowed with luxuriant forest which covers more than 30% of its geographical area. The forests of Madhya Pradesh have six Tiger Reserves, many National Parks and Sanctuaries, inhabitating large variety of flora and fauna along with picturesque landscape and water bodies etc.

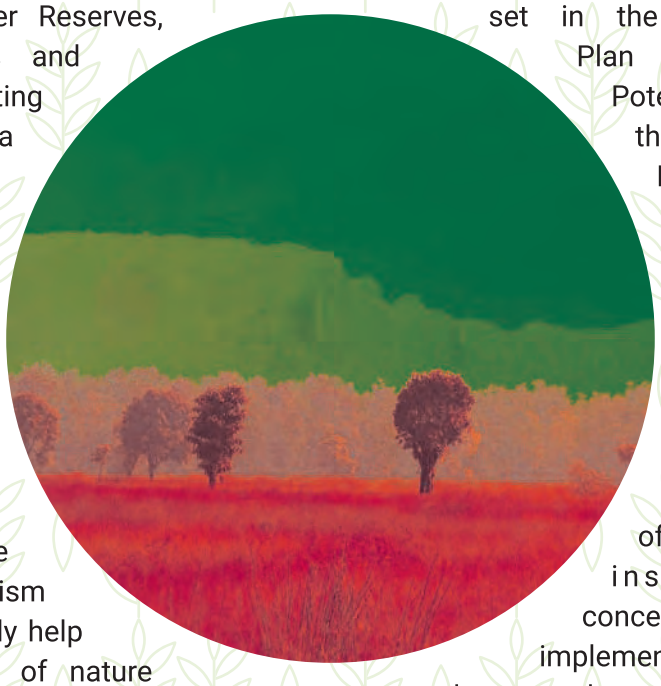

The above scenario makes Madhya Pradesh a potential world class Ecotourism destination. The development of Ecotourism destinations will not only help in better conservation of nature but will also be an effective tool for providing employment opportunities to local population. Incidentally these potential areas are in such locations, where other important opportunities are comparatively less, which again calls for taking up ecotourism in these employment opportunities deficient areas.

MP Ecotourism Development Board (MPEDB), the first of its kind in the country, was created on 12th July 2005, under the M.P. Society Registration Act 1973. In line with of objective set in the National Working Plan Code, 2014 and Potential available in the Madhya Pradesh. M.P. Ecotourism Development Board is working with philosophy that enjoyment and recreation of the people can deliver ecological benefits. The vision of the board is to institutionalize the concept of Ecotourism and implement it in the forests and other natural areas of Madhya Pradesh in a manner, so that Ecotourism becomes an integral part of forest management and other major sustainable development options for remotely located and marginalized forest dependent communities of the state.

Along with imparting unique experience of wilderness and nature based activities to the eco-sensitive people, 'Conservation' of the

natural resources in and around forests, and to create 'Sustainable Livelihood' opportunities for the local forest dwelling communities through various 'Capacity Building Initiatives', are the key thrust areas of 'Ecotourism management'. Broadly following four areas of thrust are catered by MPEDB :

1. Destinations Development
2. Promoting Responsible Tourism in Buffer area of National Parks
3. Awareness / Outreach programs
4. Skill and Capacity building programs

1.Destinations Development

Madhya Pradesh has vast and diverse forest, which is the largest forest area among all the States of the Country comprising of teak, sal, miscellaneous and bamboo forests. Fauna wise also State has large number of Wildlife in its 11 National Parks and 24 wildlife sanctuaries, covering almost more than 12% of the forest area. The forest area of the State is gifted with picturesque landscape and large number of water bodies. Thus there are numerous destinations which can be developed as a ecotourism destination.

Madhya Pradesh has notified Madhya Pradesh Forest (Recreational & Wildlife Experience) Rules, 2015 which has given impetus to promote ecotourism in the state, as it facilitates and empower to create low impact basic infrastructures for ecotourism such as Camping facilities, Machan, Pagoda, Sitouts, Parking, Toilets, Fencing etc. These Rules cover all the Reserve Forest area, except which falls under any sanctuary or National Park notified under Wildlife (Protection) Act, 1972. The Under the above rules till date 106 Recreational areas and 13 Wildlife experience areas have been notified. M.P. Ecotourism Development Board has taken up development of 56 recreational areas and 3 Wildlife experience areas. Slowly and studiedly these destinations are becoming popular among eco tourists.

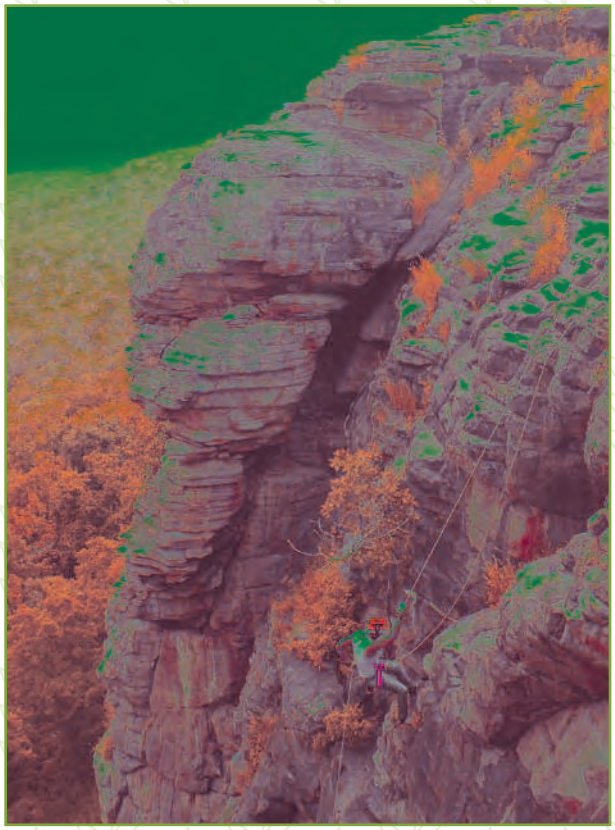

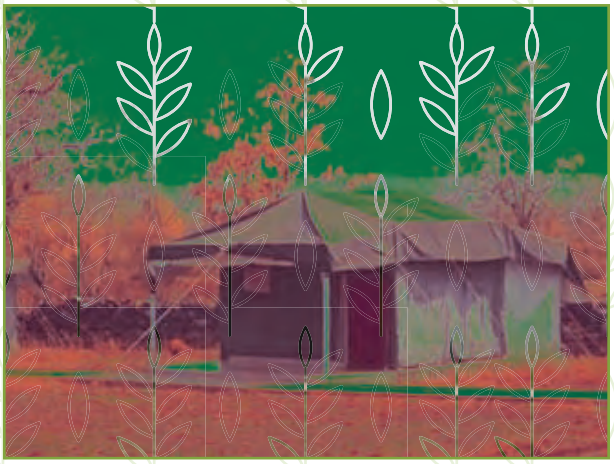

2. Promoting Responsible Tourism in Buffer area of National Parks

The State has been known for its Scientific management of Protected Areas and has been in the for font of Wildlife tourism for a long time. In the light of the increasing pressure on core areas and guidelines issue by NTCA, the State Government has taken initiatives through MP Ecotourism Development Board to promote ecotourism activities in the buffer areas. This initiative has given breathing space within tourism zone of core areas and some of these destinations are now equally popular as those in core tourism areas. This initiative has been helping to mitigate pressure of tourism in core areas.

Madhya Pradesh Ecotourism Development Board (MPEDB) has initiated buffer area development in all the Tiger Reserves of the State and 44 such places have been developed. The visitations in these areas are 54821 and 65347 in the year 2016-17 and 2017-18 respectively. The trend shows likely increase in the coming years. The prominent buffer areas undertaken in the State are as under :

S.No.	Name of Tiger Reserve	Buffer area destinations
1	Panna Tiger Reserve	Hinota, Panna buffer, Raneh fall
2	Satpura Tiger Reserve	Bagra, Churna, Panchmari
3	Kanha Tiger Reserve	Sijhora, Khapa, Khatiya, Sarahi, Phen Sanctuary
4	Sanjay Tiger Reserve	Keolari, Badkadol, Madwas
5	Pench Tiger Reserve	Rukhad, Khawasa, Karmajhiri, Sakata, Ari, Nalair
6	Bandhavgarh Tiger Reserve	Dhamokhar, Manpur, Panpatha

3. Awareness / Outreach Programs

With possession of huge natural resources there is equally large responsibility of conserving the forest and wildlife of the State. One of the means to achieve conservation is education and awareness program. The people living within and in the periphery of forest area are major stakeholders in conservation of natural wealth. Students of the school in and around forest areas are a great asset if they can be motivated for conservation and protection of forest and wildlife. Based on this principal M.P. Forest Department has taken up a major education and awareness program known as "Anubhuti". MP Ecotourism Development Board is nodal agency for organizing Eco Camps for nature education and conservation.

These Camps are organized every year between 15 December to 15 January. All territorial Wildlife and Forest Development Corporation's ranges are covered in the program and in each range depending upon the financial resources one or two camps are organized. These day long camps are catered through Master Trainers, who are experienced retried Forest officers and environmentalists. Before the camps, two days Master Trainers training workshop are organized to enable them for better interpretation. The local officers are given full freedom within given frame work to incorporate innovation and local initiatives.

The day long camps starts early in the morning and the students are transported to the camp sites. Selection of these camp sites are based on their diversity and distance not more than 20 to 30 km from the schools. There are large diversities in camp sites e.g. National Parks, Sanctuaries, Historical, anthropological, ecotourism destinations, nurseries, depots, water bodies etc. the camp starts with early wildlife/bird watching trails and followed by breakfast. After the breakfast students are taken to "Prakati ki sair", where Master trainers and department officials interpret about trees, medicinal plants, wildlife, wildlife signage's, various forestry operations, soil moisture conservation etc. The students are exposed to various department activities like plant preparation, plantation, logging and felling operations, depot, fire protection, silvicultural operation, wildlife rescue operation etc. and the introduction and responsibility of forest officials. After this round lunch is provided in natural environment and then various quiz, lectures and activities are carried out. The last session is feedback and validictory and then students are safely transpoted back to their homes.

The M.P. Forest Department organizes these camps with lot of zeal and devotion and undertakes lot of local innovations like special camps for "Divyang Students", Pink camps, wildlife safaris, logos, rallies, health camps, yoga camps, treasure hunt etc. All the camps are plastic free and cleanliness during and after

the camp is focused upon. All the participant students is provided with quality reading material, caps and participation certificates. The highly motivated and willing participants are selected as Nature Volunteer Force, with the aim of developing them as Ambassador for Forest and Wildlife Conservation. Large number of people's representatives and officials of other departments also do participate in these camps. Print and electronic media is actively involved and through them the message of camp is dispersed to larger masses. The participation in last 3 year is as under :

Year	Number of Camps per Range	Total Number of Camps	Number of education institutes	Number of Students
2016-17	1	393	1938	53935
2017-18	2	903	2735	111068
2018-19	1	477	1744	61181
2019-20	2	956		112000
Total		**2729**		**338184**

In the year 2018-19 the famous cine actor and environmentalist Ms. Diya Mirza has agreed to be the Brand Ambassador of Anubhuti program and actively participated in some of the camps and encouraged students.

4. Skill and Capacity building programs

There are multiple stakeholders in ecotourism such as local community, forest officials and tourists etc. Especially local community and forest officials are key stakeholders, who are responsible for providing quality services and ensure responsible tourism. These persons require capacity building on continuous basis for effective performance of their roles in ecotourism. MP Ecotourism Development Board is working on capacity building training aspect of community as well as forest officials.

Following are major fields in which capacity building programs are undertaken by the Board taking help of expert institutions of the field.

Hospitality Training

Hospitality is the key to any successful venture dealing with ecotourist visiting the destinations. It is amalgamation of various skills such as Soft Skills, Table etiquettes, house-keeping, cooking, presentation and services etc. Board have been organizing this training with the help of Madhya Pradesh Institute of Hospitality Travel & Tourism Studies and the results are wonderful and has enhanced experience of ecotourist visiting the destinations.

Guide/ Naturalist Training

Guides or naturalist are interface between nature and ecotourist. Guide/ Naturalist has to have knowledge of flora, fauna, geology, history of the area etc. and also should have good oral communication skills, to perform his job in a proper manner. In protected areas and ecotourism destinations of M.P., more than 700 guides/naturalists are registered with the department. Their knowledge has to be upgraded and updated. Board every year undertakes 1 week refresher course for all the guides registered with the department. For these courses services of experienced and professional naturalist, biologist and foresters are taken up. Every year training venues are rotated so as to gain better exposure and learning from experience sharing.

Boatsman Training

Many ecotourism destinations in the State are situated near water bodies and at such destinations water based activities are major attractions among the tourists of all age group. Carrying out these activities require high skills as they involve human life risk.

Keeping this in mind M.P. Ecotourism Board has started a 12 days training program in collaboration with NIWS (National Institute of Water Sports) Goa, Ministry of Tourism. During this training, skills such as Basics of Motor boat, Operations techniques, Rescue Techniques, First- Aid Technique with CPR training, Maneuver Techniques etc. are imparted to the trainees.

Camp Management / Adventure Training

Camping is most desired an asked activity in ecotourism. Board has developed many places with camping infrastructures and promoting the same in large scale.The persons involved in camping has to have various skills as types of tents, how to pitch a tent, how to prepare a camp site, how to create sanitation facility, safety measures & safety equipment andtheir maintenance, team building games, group activities, tour guiding skills etc.

M.P. Ecotourism Board has structured a one week training program to understand the various aspects of camping and low risk adventure activities to keep the guest engaged at any ecotourism destination.

Ecotourism Exposure Training

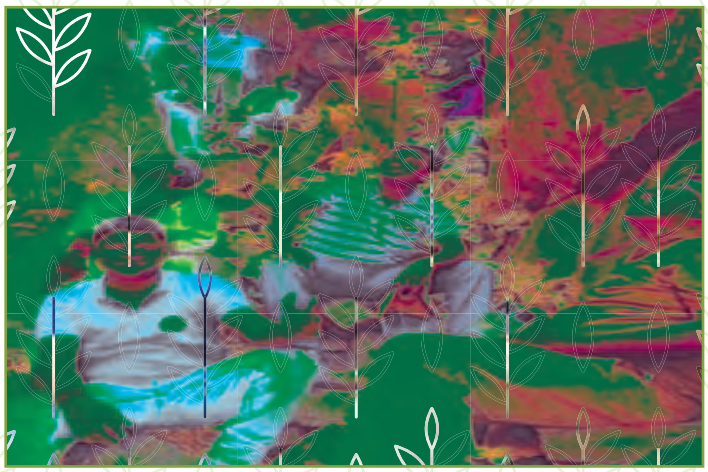

MP Ecotourism Development Board runs all its activities through field officials of the MP Forest Department, which are designated as ex-officio Managers of the Board. On the field it is the Forest officials who conducts ecotourism activities and manages destinations, therefore it is needed that their capacity building is also taken up for better understanding and management of ecotourism. Regular courses of forest officials are organized by the Board at RCVP Narohana Administration Academy, Bhopal. A two days course specially designed to impart the core values of ecotourism, activities, Do's & Don'ts, various operations models, current scenario of ecotourism in India/World, is conducted for various ranks of forest officials.

Way Forward

Tourism is a important service sector and is one of the largest growing industry, witnessing overall increase in tourists visiting various domestic destinations. Tourism market is growing into several sectors and sub sectors and there are an array of types of tourism catering to tourist with various inclination and requirements. Some of the types are– Adventure tourism, Nature tourism, Nature based tourism, Wildlife tourism, Green tourism, Rural tourism, Community based tourism, Cultural tourism, Heritage tourism, Health tourism, Herbal tourism and so on. Many of these types can be catered through ecotourism and therefore Board is exploring other verticals too, to promote ecotourism in the state to engage more and more local community for their economic strengthening and in turn develop motivation and awareness among them to protect and conserve the natural resources.

(S.S. Rajpoot) IFS

Chief Executive Officer
MP Ecotourism Development Board &
Add. Principal Chief Conservator of Forests
(Wildlife Conservation)